*Quest Journals*
*Journal of Research in Humanities and Social Science*
*Volume 14 ~ Issue 8 (August 2026) pp: 137-144*
*ISSN(Online):2321-9467*
www.questjournals.org

**Research Paper**

# वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महात्मागांधी के आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना: चुनौतियाँ और संभावनाएँ

[1]रश्मि कुमारी, [2*]डॉ. संजय तिवारी
*[1]शोधछात्रा, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार, [2]असिस्टेंट प्रोफेसर, गयाकॉलेज (मगध वि.वि.) गया, बिहार*
**Corresponding Author*

**शोध सार**
*महात्मा गांधी ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान आत्मनिर्भरता को केवल एक आर्थिक नीति नहीं, बल्कि एक जीवन-दर्शन के रूप में प्रस्तुत किया था।उनकी आत्मनिर्भरता का विचार केवल आर्थिक आज़ादी तक संकीर्ण नहीं था, अपितु यह वह व्यापक सोच थी जिसमें सामाजिक न्याय, नैतिकता, विकेंद्रीकृत प्रणाली, सहयोगपूर्ण विकास और मानवीय मूल्य जैसे तत्व शामिल थे। वर्तमान में वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति, आर्थिक प्रतिस्पर्धा, पर्यावरणीय संकट और महामारी के बाद की परिवर्तित वैश्विक परिस्थितियों में गांधी जी की 'आत्मनिर्भरता' के विचार का महत्व फिर से बढ़ गया है। स्वतंत्रता के लगभग सात दशकों के बाद, वर्ष 2020 में भारत सरकार द्वारा प्रारंभ किया गया 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' गांधी जी की विचारधारा की प्रासंगिकता को पुनः एक नए सिरे से रेखांकित करता है।*
*प्रस्तुत शोध पत्र, गांधी जी की आत्मनिर्भरता की अवधारणा का विश्लेषण करते हुए वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इसकी स्थिति तथा भावी संभावनाओं एवं चुनौतियों के संदर्भ में एक समग्र मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। यह शोध पत्र आत्मनिर्भरता के विचार के व्यावहारिक क्रियान्वयन की संभावनाओं को टटोलता है, और भारत की एक आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था की अवधारणा की पूर्ति हेतु संभावित उपायों का भी विवेचन करता है। शोध और विश्लेषण के पश्चात प्राप्त निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि वर्तमान समय में चल रही आत्मनिर्भर भारत जैसी योजनाओं का स्वरूप भले ही औद्योगीकरण और वैश्विक प्रतिस्पर्धा पर केंद्रित है, तथापि गांधी जी की विचारधारा के स्वदेशीकरण, विकेंद्रीकरण, ग्रामोद्योग आधारित अर्थव्यवस्था और पर्यावरण-संतुलन जैसे मूल तत्वों को समाहित किए बिना वास्तविक आत्मनिर्भरता की प्राप्ति का लक्ष्य संभव नहीं होगा।*

***मुख्य शब्द:*** *महात्मा गांधी, आत्मनिर्भरता, स्वदेशी, सर्वोदय, ग्राम स्वराज, आत्मनिर्भर भारत, विकेंद्रीकरण*

*Received 05 Aug., 2026;* ***R****evised 14 Aug., 2026;* ***A****ccepted 16 Aug., 2026* *© The author(s) 2026.*
***P****ublished with open access at* ***www.questjournals.org***

**प्रस्तावना**

आत्मनिर्भरता का विचार भारत की सांस्कृतिक चेतना में सदियों से रचा-बसा रहा है, किंतु इसे एक व्यवस्थित राष्ट्रीय विचार का रूप महात्मा गांधी ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संघर्ष के दौरान दिया। गांधी जी का मानना था कि राजनीतिक स्वतंत्रता तब तक अधूरी है जब तक भारत की जनता आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं हो जाती। उनके लिए आत्मनिर्भरता केवल विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार तक सीमित नहीं थी, अपितु यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर आधारित विकास, प्रशासनिकविकेंद्रीकरण, स्थानीय संसाधनों के उत्पादक उपयोगऔर प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा तथा श्रम के सम्मान से जुड़ा एक व्यापक दर्शन था। महात्मा गांधी का सम्पूर्ण जीवन भारतीय समाज के सर्वांगीण विकास के लिए समर्पित रहा। गांधी जी का मानना था कि जब तक प्रत्येक व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं करने में सक्षम नहीं होगा, तब तक वास्तविक स्वतंत्रता की प्राप्ति संभव नहीं है। गांधीजी की आत्मनिर्भरता की संकल्पना केवल आर्थिक स्वावलंबन तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह एक नैतिक, सामाजिक और राजनीतिक दर्शन था जिसका उद्देश्य व्यक्ति और समाज को स्वतंत्र, गरिमामयी और स्वाभिमानी बनाना था और यह संकल्पना आज के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अब एक प्रासंगिक आवश्यकता बन चुकी है।

इक्कीसवीं सदी का वैश्विक परिदृश्य तीव्र तकनीकी प्रगति के साथ ही अभूतपूर्व आर्थिक असमानताओं, वैश्विक महामारी, भू-राजनीतिक उथल-पुथल, पर्यावरणीय संकटों और जलवायु परिवर्तन का भी साक्षी रहा है। आज भारत विश्व की

सबसे तीव्र गति से विकसित होती अर्थव्यवस्थाओं में सम्मिलित है। इसके बावजूद बेरोजगारी, ग्रामीण पलायन, आर्थिक विषमता, पर्यावरणीय संकट, कृषि संकट, वैश्विक बाजार पर निर्भरता तथा स्थानीय उद्योगों का ह्रास जैसी अनेक समस्याएँ इसके समक्ष विद्यमान हैं।आज जब भारत विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में गिना जाता है और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का प्रयास कर रहा है, तब गांधीवादी आत्मनिर्भरता की संकल्पना को फिर से समझना और अपनाना आवश्यक हो गया है।

कोविड-19 महामारी के पश्चात भारत सरकार द्वारा 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' की घोषणा ने गांधीजी के स्वदेशी एवं आत्मनिर्भरता के विचारों को पुनः राष्ट्रीय विमर्श के केंद्र में ला दिया है। इस महामारी के पश्चात वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में उत्पन्न व्यवधान ने संपूर्ण विश्व को यह सिखाया कि अत्यधिक आयात-निर्भरता किसी भी राष्ट्र की सुरक्षा और स्थिरता के लिए खतरा उत्पन्न कर सकती है। इसी पृष्ठभूमि में भारत सरकार ने मई 2020 में "आत्मनिर्भर भारत अभियान" की घोषणा की थी, जिसका उद्देश्य भारत को एक सशक्त, प्रतिस्पर्धी और आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित करना है।यद्यपि वर्तमान आत्मनिर्भर भारत कार्यक्रम आधुनिक उद्योग, डिजिटल तकनीक, नवाचार तथा वैश्विक प्रतिस्पर्धा पर आधारित है, वहीं गांधीजी की आत्मनिर्भरता की संकल्पना नैतिक अर्थशास्त्र, ग्राम स्वराज, कुटीर उद्योग, स्थानीय उत्पादन तथा मानवीय मूल्यों पर आधारित थी। वर्तमान में इन दोनों दृष्टिकोणों के मध्य सामंजस्य स्थापित करना आज के भारत की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

**गांधीजीकीआत्मनिर्भरभारतकीसंकल्पनातथाऐतिहासिक, दार्शनिकएवंआर्थिकआधार:**

महात्मा गांधी के लिए आत्मनिर्भरता का अर्थ केवल आर्थिक स्वावलंबन नहीं था। यह व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र की नैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा आर्थिक स्वतंत्रता का समन्वित स्वरूप था।गांधी जी ने इस सम्बन्ध में कहा था—भारत का भविष्य उसके गाँवों में बसता है।

गांधीजी का आत्मनिर्भर भारत स्वदेशी, ग्राम स्वराज, श्रम की प्रतिष्ठा, नैतिक अर्थव्यवस्था, समानता, सामाजिक न्याय और पर्यावरणीय संतुलन जैसे स्तम्भों पर आधारित एक विस्तृत अवधारणा है। उन्होंने मशीनीकृत औद्योगीकरण के स्थान पर श्रम और हस्तशिल्प आधारित उत्पादन प्रणाली को अधिक उपयुक्त माना क्योंकि इससे रोजगार का सृजन होता है तथा आर्थिक शक्ति का विकेंद्रीकरण होता है। यह विचार आज भी रोजगार आधारित विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

गांधीजी का आत्मनिर्भरता का विचार उनके समग्र जीवन-दर्शन का हिस्सा था। इसे समझने के लिए उनके कुछ मूलभूत सिद्धांतों को समझना आवश्यक है:

1. **स्वदेशीकासिद्धांत:**

गांधीजी के सम्पूर्ण आर्थिक दर्शन का मूल आधार स्वदेशी था।स्वदेशी का अर्थ केवल विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार नहीं, बल्कि स्थानीय संसाधनों, स्थानीय कौशल तथा स्थानीय उत्पादन को प्राथमिकता देना था। आर्थिक संदर्भ में इसका अर्थ था कि जिन वस्तुओं का उत्पादन स्थानीय स्तर पर हमारे पड़ोसियों द्वारा किया जा सकता है, उन्हें बाहर से नहीं खरीदा जाना चाहिए।गांधी जी के लिए स्वदेशी केवल विदेशी वस्तुओं का त्याग नहीं था, बल्कि यह एक नैतिक भावना थी जिसके अंतर्गत व्यक्ति अपने निकटतम परिवेश में उपलब्ध वस्तुओं और सेवाओं का उपयोग करने को प्राथमिकता देता है।

उनका मानना था कि स्वदेशी की भावना हमें सेवा करने और दूर के व्यक्ति की उपेक्षा किए बिना अपने निकटतम परिवेश में ही अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन खोजने के लिए प्रेरित करती है। स्वदेशी का यह विचार आर्थिक आत्मनिर्भरता के साथ-साथ सामुदायिक सहयोग और स्थानीय संसाधनों के अधिकतम उपयोग पर बल देता था। स्वदेशी की अवधारणा के अंतर्गतस्थानीय रोजगार, आर्थिक स्वतंत्रता, सामाजिक समानता, राष्ट्रीय स्वाभिमान और स्थानीय उद्योगों का संरक्षण जैसे अनेक प्रमुख उद्देश्य निहित थे।वर्तमान'वोकल फॉर लोकल' अभियान इसी संकल्पना का आधुनिक रूप माना जा सकता है।

2. **ग्रामस्वराज:**

गांधी जी की आत्मनिर्भरता की संकल्पना का केंद्र बिंदु भारत के गांव थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि भारत की आत्मा उसके गांवों में बसती है अतः जब तक गांव आत्मनिर्भर तथा स्वावलंबी नहीं बनेंगे, तब तक संपूर्ण राष्ट्र की आत्मनिर्भरता एक कल्पना मात्र रहेगी। ग्राम स्वराज की उनकी अवधारणा में प्रत्येक गांव को एक स्वतंत्र और आत्मनिर्भर इकाई के रूप में देखा गया था, जो अपनी मूलभूत आवश्यकताओं—भोजन, वस्त्र और आश्रयकी पूर्ति स्वयं करने में सक्षम हो। यह विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था का प्रतिमान था, जिसमें उत्पादन के साधन बड़े-बड़े केंद्रीकृत कारखानों के बजाय लाखों छोटी इकाइयों में विकेंद्रित रहें, ताकि रोजगार का अधिकतम विस्तार हो सके।इससे समाज के अंतिम पायदान पर खड़ा

व्यक्ति भी इसका लाभ पा सकेगा। गांधीजी ग्राम स्वराज को वास्तविक लोकतंत्र का आधार मानते थे। वर्तमान पंचायती राज व्यवस्था इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास माना जा सकता है।

**3. सर्वोदयऔरअंत्योदय:**

सर्वोदय गांधी जी की संपूर्ण सामाजिक-आर्थिक विचारधारा का सार है। इसका अर्थ है समाज के प्रत्येक वर्ग, विशेषकर सबसे वंचित एवं शोषित व्यक्ति (अंत्योदय)का कल्याण। गांधीजी की आत्मनिर्भरता का लक्ष्य केवल उत्पादन बढ़ाना नहीं था, बल्कि 'सर्वोदय' (सभी का उदय) और 'अंत्योदय' (समाज के सबसे कमजोर व्यक्ति का कल्याण) था। उनकी आत्मनिर्भरता का पैमाना यह था कि क्या कोई नीति समाज के सबसे गरीब और असहाय व्यक्ति को अपने जीवन पर नियंत्रण रखने की शक्ति देती है या नहीं। गांधी जी की आत्मनिर्भरता केवल राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक शक्ति के संचय तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसका अंतिम लक्ष्य था कि समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास की किरण पहुंचे। यही कारण है कि उनकी आत्मनिर्भरता की अवधारणा पूंजीवादी विकास के प्रतिमान से पूर्णतः भिन्न थी, जो प्रायः संसाधनों के केन्द्रीकरण पर आधारित है।

**4. खादीऔरग्रामोद्योगआंदोलन:**

खादीगांधीजीकीआत्मनिर्भरताकीसंकल्पनाकासबसेप्रतीकात्मकऔरव्यावहारिकस्वरूपथा।चरखागांधीजीकेलिएकेवलसूतकातनेकाउपकरणनहींथाबल्किआर्थिकस्वतंत्रताकाप्रतीकथा।चरखेकेमाध्यमसेसूतकातनाऔरखादीवस्त्रधारणकरना केवलएकआर्थिकक्रियानहीं, बल्किआत्म-सम्मान, श्रमकीगरिमाऔरस्वावलंबनकाप्रतीकबनगयाथा।गांधीजीनेखादीकोग्रामीणबेरोजगारीदूरकरने, विदेशीवस्त्रउद्योगपरनिर्भरतासमाप्तकरनेतथाजनसामान्यमेंस्वाभिमानजगानेकेएक व्यावहारिक साधनकेरूपमेंप्रस्तुतकिया।इसकेसाथ-साथउन्होंनेहस्तशिल्प, कुटीरउद्योगऔरस्थानीयपारंपरिकज्ञानपरआधारितअन्यग्रामोद्योगोंकोभीप्रोत्साहितकिया, जैसेहाथसेबनायागयाकागज, स्थानीयतेलघानीउद्योगऔरचर्मशिल्प इत्यादि।

**5. विकेन्द्रीकृतअर्थव्यवस्था:**

गांधीजीकेंद्रीकृतऔद्योगीकरणकेविरोधीथे। यहसिद्धांतआर्थिकअसमानताकोकमकरनेतथासंसाधनोंकेन्यायपूर्णवितरणकोसुनिश्चितकरनेकेउद्देश्यसेप्रस्तुतकियागयाथा, ताकिआत्मनिर्भरताकालाभसमाजकेसबसेनिचलेवर्गतकभीपहुंचसके। गांधी जी केअनुसारउत्पादनकाविकेंद्रीकरण, स्थानीयसंसाधनोंकाउपयोग, सामुदायिकभागीदारी और स्थानीयबाजारआर्थिकअसमानताकोकमकरतेहैं। गांधीजीअर्थव्यवस्थाकोकेवललाभअर्जितकरनेकामाध्यमनहींमानतेथे, अपितु उनका लक्ष्य समावेशी सामुदायिक विकास की अवधारणा का पोषक था।

**गांधीवादीआत्मनिर्भरताबनामआधुनिक 'आत्मनिर्भरभारतअभियान':**

भारतसरकारद्वारावर्ष 2020 मेंप्रारम्भकियागया‘आत्मनिर्भरभारतअभियान’देशकीआर्थिकक्षमताकोसुदृढ़बनाने, स्थानीयउत्पादनकोप्रोत्साहितकरने, रोजगारसृजनकरनेतथावैश्विकप्रतिस्पर्धामेंभारतकीभागीदारीकोबढ़ानेकीएकव्यापकपहलहै।कोविड-19 महामारीकेदौरानवैश्विकआपूर्तिश्रृंखलाओंकेबाधितहोनेसेयहस्पष्टहुआकिकिसीभीराष्ट्रकेलिएआवश्यकवस्तुओं, स्वास्थ्यसेवाओं, कृषि, औद्योगिकउत्पादनतथातकनीकीसंसाधनोंमेंआत्मनिर्भरहोनाअत्यंतआवश्यकहै।प्रधानमंत्रीद्वाराप्रस्तुतआत्मनिर्भरभारतकेपाँच स्तंभ—अर्थव्यवस्था, आधारभूतसंरचना, प्रौद्योगिकी-संचालितप्रणाली, जन सांख्यिकीयशक्तितथामांगभारतकोएकसशक्त, सक्षमऔरप्रतिस्पर्धीराष्ट्रकेरूपमेंस्थापितकरनेकालक्ष्यरखतेहैं।यद्यपियहकार्यक्रमआधुनिकआर्थिकविकासकीआवश्यकताओं कोध्यानमेंरखकरतैयारकियागयाहै, तथापिइसकीमूलभावनागांधीजीकेस्वदेशी, स्थानीयउत्पादनतथारोजगारोन्मुखविकासकेसिद्धांतोंसेमेलखातीहै।

वर्तमानपरिप्रेक्ष्यमेंगांधीजीकेविचारोंकीप्रासंगिकताकोसमझनेकेलिए, पारंपरिकगांधीवादीदृष्टिकोणऔरआधुनिकआर्थिकनीतियोंकेबीचतुलनात्मकविश्लेषणआवश्यकहै, जिसे तालिका के रूप में निम्नलिखित प्रस्तुत किया गया है-

| तुलनात्मकबिंदु | महात्मागांधीकादृष्टिकोण | आधुनिक 'आत्मनिर्भरभारत' विचारधारा |
|---|---|---|
| **मूलदर्शन** | नैतिक, मानवीयऔरप्रकृति-अनुकूलस्वावलंबन। | आर्थिकवृद्धि, वैश्विकप्रतिस्पर्धाऔरभू-राजनीतिकसुरक्षा। |
| **उत्पादनकापैमाना** | जनसाधारणद्वाराउत्पादन | बड़ेपैमानेपरउत्पादनऔरमेकइनइंडिया |
| **तकनीककीभूमिका** | श्रम-प्रधानतकनीक (Labor-intensive), मशीनीकरणकासीमितऔरनियंत्रितउपयोग। | पूंजी-प्रधान, एआई (AI), डिजिटलइंफ्रास्ट्रक्चरऔरऑटोमेशन। |
| **केंद्रबिंदु** | ग्रामीणअर्थव्यवस्थाऔरकुटीरउद्योग। | विनिर्माण (Manufacturing) हब, वैश्विकआपूर्तिश्रृंखला (Supply Chain) औरस्टार्टअप्स |

गांधीजीकीआत्मनिर्भरताकीसंकल्पनाऔरवर्तमानआत्मनिर्भरभारतअभियानकेबीचनामकीसमानताकेबावजूदवैचारिक और व्यावहारिक धरातल पर दोनोंमेंकुछभिन्नताएंभी दृष्टिगोचरहोतीहैं जिन पर प्रकाश डालना आवश्यक है।

सर्वप्रथम, केंद्रीयताकेप्रश्नपरविचारकरेंतोगांधीजीकीसंकल्पनाग्राम आधारिततथाविकेंद्रीकृतथी, जबकिवर्तमानआत्मनिर्भरभारतअभियानके अंतर्गत बड़ेपैमानेपरऔद्योगिकविनिर्माण, बड़ीकंपनियोंतथाशहरी-औद्योगिककेंद्रोंपरअधिकध्यान दिया गयाहै।स्पष्टतः इसयोजनाकालाभमुख्यतःबड़ेऔरमध्यमस्तरकेउद्योगोंकोअधिकसुगमतासेप्राप्तहोताहै, जबकिगांधीवादीमॉडलमेंलघुएवंकुटीरउद्योगोंतथाहस्तशिल्पकोअधिक वरीयता दी गई थी।

दूसरा, प्रौद्योगिकीकेप्रतिदृष्टिकोणमेंभीअंतरस्पष्टहै।गांधीजीबड़ीमशीनोंतथाभारीउद्योगोंकेप्रतिसशंकितथे, विशेषकरतब,जबवेमानवश्रमकास्थानलेलेंऔरबेरोजगारीउत्पन्नकरें।उनके अनुसार हस्तशिल्प का अधिकतमउपयोग किया जाना चाहिए जिससे स्वरोजगार को बढ़ावा मिले।इसकेविपरीत, वर्तमानअभियानडिजिटलप्रौद्योगिकी, स्वचालन (ऑटोमेशन), कृत्रिमबुद्धिमत्तातथाउच्चतकनीकीविनिर्माणकोआत्मनिर्भरताकेमहत्वपूर्णसाधनकेरूपमेंदेखताहै।

तीसरा, दोनों के लक्ष्यमेंभीअंतरहै।गांधीजीकेलिएआत्मनिर्भरताकाअंतिमउद्देश्यनैतिकतथाआध्यात्मिकउत्थान, सामाजिकसमानताऔरश्रमकीगरिमाकीस्थापनाथी।वर्तमानअभियानकालक्ष्यमुख्यतःआर्थिकप्रतिस्पर्धा में बने रहना, निर्यातको बढ़ानाऔरवैश्विकआपूर्तिश्रृंखलामेंभारतकीस्थितिसुदृढ़करनाहै, जोनिश्चित रूप सेविशुद्ध व्यापारिकदृष्टिकोणहै।

इन भिन्नताओं के पश्चात् भीदोनोंदृष्टिकोणोंमेंकुछमहत्वपूर्णसमानताएंभीविद्यमानहैं।दोनोंहीआयात-निर्भरताकोकमकरने, घरेलूउत्पादनक्षमताबढ़ानेऔरस्थानीयउत्पादोंकेप्रतिगर्वकीभावनाजागृतकरनेपरबलदेतेहैं। "वोकलफॉरलोकल" कानारागांधीजीकेस्वदेशीसिद्धांतकीही प्रतिध्वनिप्रतीतहोताहै।इसीप्रकारखादीऔरग्रामोद्योगकोवर्तमानसरकारद्वारापुनःबढाने के प्रयासतथा "एकजिला, एकउत्पाद" जैसीस्थानीय प्रोत्साहन की योजनाएंगांधीवादीभावनाकोही प्रतिबिंबितकरतीहैं।

इसप्रकारयहकहाजासकताहैकिआधुनिकआत्मनिर्भरता की संकल्पनाजहांभारतकोएकवैश्विकविनिर्माणशक्तिबनानेऔरआयातपरनिर्भरताकमकरनेपरकेंद्रितहै, वहींगांधीवादीआत्मनिर्भरताकाआधारस्थानीयस्तरपरआत्मनिर्भरहोकरराष्ट्र का विकासकरनाथा।आधुनिकनीतिकोअधिकसमावेशीबनानेकेलिएइसमेंगांधीवादीतत्वोंकासम्मिश्रणअनिवार्यप्रतीतहोताहै। वर्तमाननीतिभले ही गांधीजीकेसिद्धांतोंकापूर्णप्रतिरूपनहींहै, किन्तुउसकीआधारभूतप्रेरणास्थानीयसंसाधनोंकीक्षमता, स्वदेशीउत्पादनऔररोजगारविस्तारसेजुड़ीहुईहै।

## आधुनिकयुगमेंगांधीवादीआत्मनिर्भरताकेमार्गमेंचुनौतियाँ:

गांधीवादीआत्मनिर्भरताकीसंकल्पनाकोवर्तमानसंदर्भमेंसाकारकरनेकेमार्गमेंअनेकगंभीरचुनौतियांविद्यमानहैं।यद्यपि गांधीवादीदृष्टिकोणअत्यंतव्यावहारिकऔरमानवीयप्रतीतहोताहै, किंतुवर्तमानवैश्विकऔरतकनीकीव्यवस्थामेंइसेपूर्णतःलागूकरनेमेंकईचुनौतियाँहैं:

1. **औद्योगीकरणऔरगांधीवादीविकेंद्रीकरणकेबीचद्वंद्वः**

वर्तमानआर्थिकनीतियांबड़ेपैमानेकेऔद्योगीकरण, बड़ीपूंजीऔरबड़ीकंपनियोंकोप्राथमिकतादेतीप्रतीतहोतीहैं, जोगांधीवादीविकेंद्रीकरणकेमूलसिद्धांतकेविपरीतहै।बड़ेकॉर्पोरेटघरानोंकेवर्चस्वसेलघुएवंकुटीरउद्योगोंकोगंभीरप्रतिस्पर्धाका सामनाकरनापड़ताहै, जिससेआर्थिकविकेंद्रीकरणका लक्ष्यकठिनहोजाताहै।

**2. ग्रामीण-शहरीअसमानता:**

आर्थिकसुधारोंतथाऔद्योगिकविकासकालाभप्रायःशहरीक्षेत्रोंतथाविकसितराज्योंमेंअधिककेंद्रितरहताहै, जबकिग्रामीणतथापिछड़ेक्षेत्रइससेवंचितरहजातेहैं।इसअसमानताकोदूरकिएबिनागांधीवादीसंकल्पना में निहितसच्चीआत्मनिर्भरताकीप्राप्तिअसंभवहै।

**3. अवसंरचनाएवंकौशलविकासकीकमी:**

ग्रामीणक्षेत्रोंमेंपर्याप्तअवसंरचना, विद्युतआपूर्ति, परिवहनसुविधातथातकनीकीशिक्षाकाअभावआत्मनिर्भरग्रामोद्योगोंकेविकासमेंएकबड़ीबाधाहै।इसी प्रकार कुशलश्रमशक्तिकेअभावमेंपारंपरिकउद्योगोंकाआधुनिकीकरणभीकठिनहोताहै।

**4. पूंजीऔरऋणकीउपलब्धता:**

लघुएवंकुटीरउद्योगोंतथाग्रामीणउद्यमियोंकोऔपचारिकबैंकिंगव्यवस्थासेपर्याप्ततथासमयपरऋणप्राप्तकरनेमेंकठिनाईहोतीहै। इससेअनेकसंभावनाशीलउद्यमप्रारंभिकअवस्थामेंहीअसफलहोजातेहैं। यद्यपि इस सम्बन्ध में मुद्रा योजना जैसी योजनाओं के माध्यम से सकारात्मक प्रयास किये गए हैं, तथापि सभी जरुरतमंदों तक इसका लाभ आज भी नहीं पहुँच सका है।

**5. पर्यावरणीयदबावऔरसंसाधनोंकादोहन:**

तीव्रऔद्योगीकरणतथाउपभोक्तावादीसंस्कृतिकेप्रसारसेप्राकृतिकसंसाधनोंपरदबावनिरंतरबढ़रहाहै, जोगांधीवादीसादगीएवंसंयमकेसिद्धांतकेविपरीतहै।संसाधनों के अनुचित दोहन तथा धारणीय विकास के अनुकूल संस्कृति का विकास न होने से पर्यावरणीय स्थिरता अब खतरे में पड़ चुकी है। इस परिवेश में सततविकासतथातीव्रआर्थिकवृद्धिकीपरस्परविरोधाभासीमांगोंकेबीचसंतुलनस्थापितकरनाएकबड़ीचुनौतीहै।

**6. नीतिकार्यान्वयनकीचुनौतियां:**

अनेकबारउत्कृष्टनीतियोंकेबावजूदउनकेप्रभावीक्रियान्वयनमेंप्रशासनिकजटिलताएं, भ्रष्टाचार, नौकरशाहीविलंबतथाराज्य-केंद्रसमन्वयकीकमीबाधाउत्पन्नकरतीहै, जिससेयोजनाओंकावास्तविकलाभअंतिमलाभार्थीतकनहींपहुंचपाता है।सरकारी तंत्र के समावेशन में अक्षमता और समय समय पर उनका पुनरीक्षण न होना समस्या को और जटिल बना देते हैं।

**7. वैश्विकमूल्यश्रृंखलाकीअनिवार्यता**

आजकाविश्वएकवैश्विकगांव (Global Village) बनचुकाहै।कोईभीदेशपूरीतरहसेअलगावमेंरहकरआर्थिकप्रगतिनहींकरसकता।आधुनिकस्मार्टफोन, कंप्यूटर, चिकित्साउपकरणऔरउन्नतरक्षाप्रणालियोंकेनिर्माणकेलिएदुर्लभखनिजों (जैसेलिथियम, कोबाल्ट) औरवैश्विकपेटेंटकीआवश्यकताहोतीहै।गांधीवादीअति-स्थानीयकरण (Extreme Localization) कीनीतिअपनानेपरभारतवैश्विकतकनीकीरेसमेंपिछड़सकताहै।ऐसीस्थितिमेंपूर्णआत्मनिर्भरताव्यवहारिकनहींकहीजासकती।

**8. मशीनीकरण, एआई (AI) औररोजगारकासंकट**

गांधीजीउनमशीनोंकेविरोधीथेजोइंसानोंकारोजगारछीनतीथीं।लेकिनआजआर्टिफिशियलइंटेलिजेंस (AI) औरऑटोमेशन (Automation) चौथीऔद्योगिकक्रांतिकेस्तंभबनचुकेहैं। इससेबड़ेपैमानेपरउत्पादनकीलागतकमहोतीहै, जिससेस्थानीयकुटीरउद्योगप्रतिस्पर्धामेंटिकनहींपाते।आधुनिकउद्योगोंमेंश्रमकीआवश्यकताकमऔरपूंजीकीअधिकहोतीहै, जोगांधीजीकेश्रम-प्रधानमॉडलकेविपरीतहै।

**9. उपभोक्तावादीसंस्कृति:**

आधुनिकसमाजकीनींव 'अधिकतम उपभोग' की अवधारणा परटिकीहै।टीवी और इन्टरनेट आधारित विज्ञापनऔरसोशलमीडियानेमानवीयआकांक्षाओंकोअसीमितरूप से बढ़ादियाहै।वैश्वीकरणऔरउपभोक्तावादकेप्रभावसेभारतीयउपभोक्ताओंकीप्राथमिकताएंप्रायःविदेशीब्रांडतथाआयातितवस्तुओंकीओरझुकीरहतीहैं।जबतकव्यापकस्तरपरउपभोक्ताव्यवहारमेंपरिवर्तननहींआता, तबतक "वोकलफॉरलोकल" जैसेअभियानसीमितप्रभावहीउत्पन्नकरपाएंगे।गांधीजीकादर्शन 'सीमितआवश्यकताओं' और 'अपरिग्रह' (गैर-संचय) परआधारितथा।वर्तमानउपभोक्तावादीदौरमेंलोगोंकोसादगीऔरन्यूनतमउपभोगकीओरमोड़नाएकबहुतबड़ीमनोवैज्ञानिकऔर सांस्कृतिकचुनौतीहै।गांधीजीआवश्यकताआधारितउपभोगकेपक्षधरथे।आजकासमाजब्रांडसंस्कृति, विलासिताकीओरअग्रसरहै।यहप्रवृत्तिगांधीवादीसादगीसेविपरीतहै।

**10. ग्रामीणबुनियादीढांचेकीकमीऔरकौशलअंतराल**

ग्रामस्वराजकीसफलताकेलिएगांवोंकासशक्तहोनाआवश्यकहै।आजभीभारतीयगांवोंमेंउच्चगुणवत्तावालीशिक्षा, स्वास्थ्यसुविधाओं, निर्बाधबिजलीऔरउच्चगतिकेइंटरनेटकीकमीहै।इसकेअतिरिक्त,

ग्रामीणयुवाओंमेंआधुनिकबाजारकेअनुकूलकौशलकाया तो अभावहै, या वे सीखना नहीं चाहते जिसकेकारणवेकेवलकमवेतनवालेअकुशलकार्योंतकसीमितरहजातेहैं। इससे शिक्षाऔररोजगारकेबीचएक गहरी खाई उत्पन्न हो चुकीहै।

## वर्तमानपरिप्रेक्ष्यमेंगांधीवादीआत्मनिर्भरताकीसंभावनाएँ

गांधीवादीआत्मनिर्भरताकोआजकेसंदर्भमेंप्रासंगिकबनानेकेलिएएक 'मध्यममार्ग' (Middle Path) कीआवश्यकताहै।इसेहम‘प्रगतिशीलस्वदेशी’या‘ग्लोकल’ (Glocal - Global + Local)दृष्टिकोणकहसकतेहैं।वर्त्तमानतकनीकीऔरसामाजिकपरिवेशमेंगांधीवादीआत्मनिर्भरताकेसिद्धांतोंकोलागूकरनेकीअपारसंभावनाएँहैं, जिन्हेंनिम्नलिखितबिंदुओंकेअंतर्गतप्रस्तुत कियाजासकताहै:

1. **ग्रामीणअर्थव्यवस्थाकापुनरुत्थान:**

भारतकीलगभगआधीसेअधिकजनसंख्याआजभीप्रत्यक्षयाअप्रत्यक्षरूपसेकृषिएवंग्रामीणअर्थव्यवस्थापरनिर्भरहै।यदि कृषिकेसाथकृषि-आधारितउद्योग, दुग्धउत्पादन, मधुमक्खीपालन, मत्स्यपालन, जैविकखेतीतथाखाद्यप्रसंस्करणउद्योगोंकोस्थानीयस्तरपरविकसितकियाजाए, तोगांधीजीकेग्रामस्वराजकीअवधारणाकोव्यवहारमेंलायाजासकताहै।गांधीवादीग्रामस्वराजकीअवधारणाकोआधुनिकतकनीककेसाथजोड़करग्रामीणअर्थव्यवस्थाकोपुनर्जीवितकियाजासकताहै।डिजिटलइंडिया, ई-नाम(राष्ट्रीयकृषिबाजार), किसानउत्पादकसंगठन (एफपीओ) तथाग्रामीणडिजिटलअवसंरचनाकेविस्तारजैसीपहलेंगांवकोआत्मनिर्भरबनानेकीदिशामेंसहायकसिद्धहोसकतीहैं।

2. **सूक्ष्म, लघुएवंमध्यमउद्यमोंकोसशक्तबनाना:**

एमएसएमईक्षेत्रभारतीयअर्थव्यवस्थाकीरीढ़हैतथारोजगारसृजनमेंइसकायोगदानअत्यंतमहत्वपूर्णहै। भारतकेसूक्ष्म, लघुऔरमध्यमउद्यम (MSME) क्षेत्रकोगांधीजीकेकुटीरउद्योगोंकाआधुनिकरूपमानाजासकताहै।वर्तमानमेंयहक्षेत्रभारतमेंकृषिकेबादसबसेअधिकरोजगारपैदाकरताहै।डिजिटलप्लेटफॉर्मोंऔरई-कॉमर्सकेमाध्यमसेग्रामीणकारीगरों, बुनकरोंऔरलघुउद्यमियोंकोसीधेवैश्विकबाजारसेजोड़ाजारहाहै।यहगांधीजीके 'जनसाधारणद्वाराउत्पादन' केसिद्धांतकोआधुनिकतकनीककेसाथसाकारकरनेकासुनहराअवसरहै।गांधीवादीविचारधारासेप्रेरितहोकरसरकारयदिइसक्षेत्रकोऋणसुगमता, कौशलविकासतथाबाजारपहुंचकेमाध्यमसेसशक्तबनाए, तोविकेंद्रीकृतआत्मनिर्भरताकालक्ष्यप्राप्तकियाजासकताहै।

3. **पारंपरिकहस्तशिल्पऔरखादीउद्योगकापुनरुद्धार- डिजिटलखादी:**

गांधीजीनेखादीकोस्वतंत्रताआंदोलनऔरआर्थिकस्वतंत्रताकाप्रतीकबनायाथा।आज 'वोकलफॉरलोकल' कानाराउसीस्वदेशीभावनाकाआधुनिकविस्तारहै।युवाओंमेंखादीऔरस्थानीयब्रांड्सकेप्रतिआकर्षणबढ़ाहै।कॉर्पोरेटसेक्टरऔर फैशनइंडस्ट्रीमें 'सस्टेनेबलफैशन' केरूपमेंखादीकीस्वीकार्यतागांधीवादीआत्मनिर्भरताकीसफलताकाएकबड़ाउदाहरणहै।वैश्विकस्तरपरहस्तनिर्मित, पर्यावरण-अनुकूलतथासततउत्पादोंकीमांगनिरंतरबढ़रहीहै।भारतीयखादी, हथकरघातथाहस्तशिल्पउद्योगइसअवसरकालाभउठाकरनकेवलघरेलूबाजारमेंबल्किअंतरराष्ट्रीयबाजारमेंभीअपनीउपस्थिति सुदृढ़करसकतेहैं, जिससेलाखोंग्रामीणकारीगरोंकोरोजगारप्राप्तहोसकताहै।

4. **स्वदेशीएवंस्थानीयउद्योगोंकोप्रोत्साहन- (वोकलफॉरलोकल):**

हस्तशिल्प, हथकरघा, खाद्यप्रसंस्करण, जैविककृषि, मधुमक्खीपालन, डेयरीउद्योगतथाअन्यग्रामीणउद्यमोंकेलिएआसानऋण,तकनीकीसहायता,विपणनसुविधा,डिजिटलप्लेटफॉर्म,ब्रांडिंगउपलब्धकराईजाए।केवलस्वदेशीउत्पादोंकाउत्पादनहीपर्याप्तनहींहै, बल्किउनकीगुणवत्ता, नवाचारतथावैश्विकप्रतिस्पर्धात्मकक्षमतामेंभीनिरंतरसुधारआवश्यकहै।अब समय आ चुका है कि "लोकल फॉर ग्लोबल" कीअवधारणाकोआगेबढ़ायाजाए।

5. **डिजिटलबुनियादीढांचेकाग्रामीणविस्तार:**

भारतीयसॉफ्टवेयर, कृत्रिमबुद्धिमत्ता, साइबरसुरक्षा, सेमीकंडक्टरनिर्माण, डेटासेंटरतथाडिजिटलस्टार्टअपकोबढ़ावादेकरतकनीकीआत्मनिर्भरतासुनिश्चितकीजाए।गांवोंकोकेवलकृषितकसीमितनरखकरउन्हेंडिजिटलहाईवेसेजोड़ाजाए।भारतनेटजैसीयोजनाओंकेमाध्यमसेप्रत्येकगांवकोहाई-

स्पीडइंटरनेटप्रदानकरनापहलाकदमहोनाचाहिए।वर्तमानयूपीआई और डिजिटलइंडिया जैसीपहलेंआत्मनिर्भरभारतकीदिशामेंमहत्वपूर्णकदमसाबित हो सकती हैं।

**6. महिलासशक्तिकरण तथा महिलाउद्यमिता:**

गांधीजीमहिलाओंकोराष्ट्रनिर्माणकीसमानभागीदारमानतेथे।स्वयंसहायतासमूहोंकेमाध्यमसेग्रामीणमहिलाएंकुटीरउद्योगों, खाद्यप्रसंस्करणतथाहस्तशिल्पक्षेत्रमेंसक्रियभूमिकानिभारहीहैं।गांधीवादीआत्मनिर्भरताकायहआयाममहिलासशक्तिकरणतथा आर्थिकसमावेशनकोएकसाथआगेबढ़ानेकीमहत्वपूर्णसंभावनाप्रस्तुतकरताहै। यदिइनक्षेत्रोंमेंप्रशिक्षणएवंवित्तीयसहायताबढ़ाईजाएतोआत्मनिर्भरभारतकीगतिऔरतेजहोसकतीहै।

**7. युवाओंकेलिएअवसर- कौशलआधारितशिक्षा**

भारतविश्वकीसबसेयुवाआबादीवालेदेशोंमेंसेएकहै। विद्यालयोंएवंविश्वविद्यालयोंमेंशिक्षाकोस्थानीयरोजगार, उद्यमिता, कृषि, डिजिटलतकनीकएवंनवाचारसेजोड़ाजाए।नईशिक्षानीतिकेअंतर्गतव्यावसायिकशिक्षाकाप्रभावीक्रियान्वयनकियाजाए। ग्रामीणयुवाओंकोपारंपरिककलाओंकेसाथ-साथआधुनिकतकनीकीकौशल (जैसेडेटाएंट्री, डिजिटलमार्केटिंग, एग्रो-टेकसंचालन) काप्रशिक्षणदियाजाएताकिवेस्थानीयस्तरपरहीरोजगारसृजितकरसकें।

**8. कृषि-प्रसंस्करणऔरजैविकखेती**

गांधीजीप्राकृतिकजीवनऔरटिकाऊकृषिकेपक्षधरथे।वर्तमानमेंपर्यावरणसंकटऔरस्वास्थ्यकेप्रतिबढ़तीजागरूकता केकारणजैविकऔरप्राकृतिकखेतीकीमांगतेजीसेबढ़ीहै।ग्रामीणक्षेत्रोंमेंहीखाद्यप्रसंस्करणइकाइयोंकीस्थापनाकरकेकृषिसेहोने वालीआयकोदोगुनाकियाजासकताहै।इससेगांवोंसेशहरोंकीओरहोनेवालापलायनरुकेगाऔरग्रामीणक्षेत्रआर्थिकरूपसेआत्मनिर्भरबनसकेंगे।

## निष्कर्ष:

महात्मागांधीकीआत्मनिर्भरभारतकीसंकल्पनाकेवलआर्थिकआत्मनिर्भरताकाविचारनहींहै, बल्कियहसामाजिकन्याय, नैतिकमूल्यों, ग्रामस्वराज, स्वदेशी, श्रमकीप्रतिष्ठा, पर्यावरणसंरक्षणएवंमानवीयगरिमापरआधारितएकसमग्रविकासदर्शनहै।उन्होंनेजिसभारतकीकल्पनाकीथी, उसमेंप्रत्येकव्यक्तिकोसम्मानजनकआजीविका, समानअवसरतथानिर्णयप्रक्रियामेंसहभागिताप्राप्तहोने के पूर्ण अवसर विद्यमान थे।यदिग्रामस्वराज, स्थानीयउत्पादन, महिलासशक्तिकरण, कौशलविकास, डिजिटलनवाचार और हरितअर्थव्यवस्थाजैसी पहलों कोसमन्वितरूपसेआगेबढ़ायाजाए, तोभारतआर्थिकरूपसेसशक्तहोनेकेसाथ-साथसामाजिकरूपसेसमावेशी, न्यायपूर्णतथापर्यावरणीयदृष्टिसेसंधारणीय विकास वालाराष्ट्रबनसकताहै।यहीमहात्मागांधीकेआत्मनिर्भरभारतकीवास्तविकभावनाहैऔरयहीविकसितभारतकेनिर्माणकास्थायीमार्गभीहै।

## संदर्भग्रंथसूची:-


- गांधी, एम. के. (1909). *हिंदस्वराज.* नवजीवनप्रकाशनमंदिर, अहमदाबाद
- गांधी, एम. के. (1962). *ग्रामस्वराज.* नवजीवनप्रकाशनमंदिर, अहमदाबाद
- गांधी, एम. के. (1936). हरिजन, 4-4-1936; 62:298
- शर्मा, बी.एम. शर्मा, रामकृष्ण दत्त. शर्मा, सविता (2015) गांधी दर्शन के विविध आयाम, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
- कुमारप्पा, जे. सी. (1945). *इकोनॉमीऑफपरमानेंस.* सर्वसेवासंघप्रकाशन, वाराणसी
- कुमार, राजीव. (2004) गांधीवादी अर्थशास्त्र और ग्रामीण विकास. रावत पब्लिकेशन, जयपुर
- मिश्र, एस. एन. (2012). आधुनिक भारत में गांधीवादी चिंतन की प्रासंगिकता. कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, दिल्ली
- शर्मा, राज कुमार (2019).गाँधी और आधुनिक विकास. निहार प्रकाशन, हैदराबाद
- दास, बी.के. (2015). गाँधीवादी राजनीति और दर्शन. राजीव प्रकाशन, नई दिल्ली
- पटेल, शक्तिशील. (2014). ग्राम स्वराजः एक पुनर्विचार. विश्वविद्यालय प्रकाशन, नई दिल्ली
- सिंह, प्रभाकर. (2017). गाँधीजी का आर्थिक विचार और भारत. राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली
- डॉ कृष्णा सिंह. (2025). गांधी का आत्मनिर्भरता (स्वदेशी) सिद्धांत और आत्मनिर्भर भारत. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग, साइंस एंड ह्यूमैनिटीज*,* 15(4), 514–525

- कुमार, आर.एवं शर्मा, एस. (2022), समकालीन भारत में गांधीवादी अर्थशास्त्र और आत्मनिर्भरता. इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल इकॉनमी, 37(2), 45-58
- सिंह, सुरेन्द्र. (2015). गाँधी का स्वदेशी मॉडल व आर्थिक विकास. जर्नल ऑफ रिसर्च इन ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस, 3(2), 46-47
- NITI Aayog. (2018). Strategy for New India @75. Government of India.https://www.niti.gov.in/sites/default/files/2019-01/Strategy_for_New_India_0.pdf
- https://www.mkgandhi.org/articles/gandhi's-economic-ideas.html
- https://www.mkgandhi.org/articles/understanding-gandhis-vision-of-swadeshi.html
- https://www.mkgandhi.org/ebks/Gandhionvillages.pdf
- https://static.pib.gov.in/WriteReadData/userfiles/Aatmanirbhar%20Presentation%20Part-1%20Business%20including%20MSMEs%2013-5-2020.pdf